

त्स्यत्स्यात् 2, 1, 4, 4. यदि दास्यत्स्यात् 4, 3, 4, 12. 5, 1, 3, 13. तत्कर्तारौ
स्व MBh. 1, 8173. Ueber dieses Participle-Fut., das in der Regel in den
ersten und zweiten Personen aller Zahlen das partic. im nom. sg. aufweist
und auch im med. in Gebrauch ist, s. die Grammatiker. Die copula ver-
bindet sich auch mit adv.: तूष्णीमासीत् MBh. 3, 4041. ता-यः — सह
सतीभ्यः Çat. Br. 1, 1, 2, 18. इति शशत्तथा स्यात् Ait. Br. 2, 29. यथा प्रियं
भगवत्तथास्तु Viçv. 2, 19. यद्विराणं न विन्देत् कथं स्यात् Ait. Br. 2, 14.
उभायामप्यनीवंस्तु कथं स्यात् M. 10, 82. अनामातेषु धर्मेषु कथं स्यात् 12,
108. कथं स्यातां सुता बालौ भवेयं च कथं त्वम् Brāhman. 2, 9. यो ऽन्यथा
सत्तमात्मानमन्यथा — भाषते M. 4, 255. एवमेव स्यात् 5, 61. किं नु खलु
यथा वयमस्यामेवमियमप्यस्मान्प्रति स्यात् Çik. 17, 14. स्यदेवमपि mit folg.
potent. es könnte auch so geschehen, dass N. 19, 6. एवमस्तु so sei es, ich
willige ein Viçv. 3, 18. Hit. 17, 20. 21, 7. 39, 9. Kathās. 22, 69. अस्त्वेवम्
(अस्त्येवम्?) तथापि mag sein, dessenungeachtet Hit. 13, 12. Hierher ge-
hört auch das periphr. perf., das durch die Verbindung eines adverb.
aufzufassenden nom. act. auf आ im acc. mit dem perf. von अस् (oder
भू) gebildet wird. In der Regel geht das nom. act. dem verb. unmittel-
bar voran, es können jedoch die beiden Worte auch getrennt wer-
den, wie z. B. Ragh. 9, 61 (16, 86): तं पातया प्रथममास पपात पश्चात्. —
7) werden: तद्वैत आसीत् Brh. Âr. Up. 1, 2, 4. तां दृष्ट्वा दशविस्तारामासं
विंशतियोजनः R. 5, 56, 18. तमसा संवृते लेकि घोरेण पशुषण च । कुर्या
विमुखाश्वासन्प्रास्वलञ्चापि मातलिः || Anā. 8, 14. तदवस्थां तु तां दृष्ट्वा स-
र्वमन्तःपुरं तदा । काकाभूतमतीवासीद्दृशं च प्रहरोद ह || N. 17, 30. नङ्गुषः
परकलत्रेदाहृदी महाभुजंग आसीत् Visav. in Z. d. d. m. G. 8, 538. तिरो
ऽसानि ich will mich verbergen Brh. Âr. Up. 1, 4, 4. Dieselbe Bedeutung
hat अस् in folgenden Verbindungen: शुक्लीस्यात् er werde weiss, अग्नि-
सात्स्यात्, राजसात्स्यात्, ब्राह्मणात्रा स्यात् P. 5, 4, 51—55. — 8) अस्तु es
geschehe. Die Lexicographen führen folgende Bedeutungen dieser Form
an: असूयापागे AK. 3, 5, 13. genug davon (कृतम्, अलम्) H. 1528; vgl.
u. 5. आनन्दे Triak. 3, 4, 1. पीडानिषेधयोः, असूयायाम्, अनुज्ञायाम् H. an. 7,
20, 21. अग्न्यनुज्ञाने, असूयापीडयोः Med. avj. 21. Vgl. अस्तुकार.
— अति darüber sein, übertreffen: सेद्विर्गोर्गोरत्यस्तन्यान् RV. 7, 1,
14. अग्न्या समाना अति सर्वात्स्याम् AV. 11, 1, 12.
— व्यति med. 2. sg. व्यतिसे, 1. sg. व्यतिहे Sch. zu P. 7, 4, 50, 52. Vop.
23, 55, 56. überwiegen: अन्या व्यतिस्ते तु ममापि धर्मः Bhaṭṭ. 2, 35.
— अनु 1) bereit sein, sich darbiehen: अद्य ते विश्वमनु दासदिष्टये RV.
1, 57, 2. न्युता अन्ता अनु दिव आसन् 10, 21, 17. अयि शर्वया अनुस्मसीति
Ait. Br. 4, 5. — 2) gelangen zu, erreichen: अनु व्याम रोदसीद्विपुत्रे RV.
1, 183, 4. ते अस्य सन्तु केतवो ऽमृत्योऽदाभ्यासो अनुषी उभे अनु 9, 70, 3.
— अयि mit loc. oder Ortsadv. 1) in Etwas sein, nahe zusammenge-
hören mit: यस्मै देवा अयि प्सि युध्यन्त इव वर्मसु RV. 8, 47, 8. अस्तरा-
स्वपि. गन्धर्व आसीत् AV. 2, 2, 3. अयि तेषु त्रिषु पदेष्वस्मि VS. 23, 50. त-
दिच्छत् यथा वयमिकाप्यसमेति Çat. Br. 6, 2, 2, 1. 8, 2, 2, 2. — 2) zu Theil
werden, vollständig gehören: सर्वा ता ते अयि देवेष्वस्तु RV. 1, 162, 8. अ-
स्मे स (रयिः) अयि व्यात् 6, 68, 1. 8, 32, 7. न तस्य वाच्यापि भागो अस्ति
10, 71, 6. यदेवात्र सोमस्य न्यक्तं तदिकाप्यसत् Çat. Br. 1, 7, 1, 1. 18. 3, 3,
4, 10. impers.: देवलेकि मे ऽप्यसत् 1, 9, 1, 16. 3, 1. 4, 3, 4, 6. 27. तस्यां नो
ऽप्यसत् 12, 3, 5, 1.

— अभि, अभिस्तम्, अभिषत्ति, अभिष्यात् P. 8, 3, 87, Sch. 1) *zufallen,*
auf Jmdes Theil kommen P. 1, 4, 91. यत्र ममाभिष्यात् तदीयताम् Sch.
— 2) *darüber sein, übertreffen, beherrschen, bewältigen:* विश्वानि सत्त्य-
भ्यस्तु मङ्गा RV. 2, 28, 1. इन्द्रं नकिंष्ट्वा प्रत्यस्त्येषां विश्वा ज्ञातान्यभ्यसि
तानि 6, 25, 5. पूषन्नापिरपूषणस्तमभि व्यात् 10, 117, 7. येनासुरा अभि देवा
अस्ताम् 53, 4, 48, 7. 1, 94, 8. 103, 19. 4, 6, 1. 12, 1. 7, 1, 10. 13. 48, 2. अग्ने स-
हस्वानभिभूरीदीसि AV. 11, 1, 6. 6, 97, 1. 7, 93, 1. 13, 1, 22. Die Texte zei-
gen Ungleichförmigkeit in der Auffassung, indem sie durch die Beto-
nung die praep. häufig vom verb. trennen, z. B. 7, 39, 4. 48, 3 und sonst.
— Vgl. अभिष्टि.
— आविस् s. u. d. W.
— उप bei oder in Etwas sein, mit dem acc.: बृहन्मित्रस्य वरुणास्य
शर्मोप स्याम् RV. 2, 27, 7.
— नि, निस्तम्, निषत्ति, निष्यात् P. 8, 3, 87, Sch. Vop. 9, 24.
— परि 1) *im Wege sein,* mit dem acc.: नकिंः सुदासो रथं पर्यास न
हीरमत RV. 7, 32, 10. नास्य ते मङ्किमानं परि ष्टः (द्यावापृथिवी) 1, 61, 8.
— 2) *verbringen, vertreiben:* संवत्सरस्य तदहः परि ष्टः so bringet ihr
den Tag des Jahres hin, am welchem ... RV. 7, 103, 7.
— प्र voran sein, in ausgezeichnetem Maasse sein, vorwiegen, her-
vorragen: स्तुषे नरा दिवो अस्य प्रसतो RV. 6, 62, 1. प्र स मित्रं मतो अस्तु
प्रयस्वान् 3, 59, 2. प्र दातुरस्तु चेतनम् 1, 13, 11. प्र ये मेकभिरेवसोत सति
7, 58, 2. ययोरस्ति प्र णः सन्ध्यम् 8, 10, 3. 1, 134, 8. 7, 20, 5.
— प्रति Jmd gleichkommen, mit Jmd wetteifern; mit dem acc. RV.
6, 25, 5 (s. u. अभि). सा नेतरे विद्ये प्रत्यास नात्तरिन्नलोक इतरे लेकि प्र-
त्यास Çat. Br. 4, 6, 3, 14. 15. 17. 2, 4, 4, 3.
— प्राडस् s. u. d. W.
— वि, विस्तम्, विष्यत्ति, विष्यात् P. 8, 3, 87, Sch.
2. अस् अस्त्यति Dhātup. 26, 100. Vop. 11, 5. आस, अस्तिष्यति, आस्थत्
P. 7, 4, 17. Vop. 8, 91. 125. 11, 5. In Verbindung mit praep. act. med.
P. 1, 3, 29. Vartt. 3. mit अभि, नि, विनि, संनि auch अस्, अस्तति. part.
praet. pass. अस्त (निरसित R. 4, 13, 45). 1) *schleudern, werfen, schiessen;*
mit dem acc. der Sache und dat. loc. oder gen. des Ziels; auch mit dem
instr. der Sache: दस्येवे कृतिमस्य RV. 1, 103, 3. अग्रे अस्मदैव्यं केकै अ-
स्यतु 114, 4. स इस्तेव प्रति धादसिष्यन् 6, 3, 5. 7, 104, 25. येना ह्रडाशे
अस्यसि AV. 1, 13, 1. ये अस्ता ये चास्याः (शरवः) 19, 2. योते ह्रड इषुमास्यत्
6, 90, 1. 3. 4, 6, 4. 7. 6, 59, 3. 63, 2. 66, 2. 10, 1, 23. 11, 2, 17. 25. 12, 4, 17.
यामिषुं गिरिशत् कस्ते बिभर्ष्यस्तेवे (dat. von अस्तु als infin.) VS. 16, 3, 22.
प्राञ्चं सुवमस्यति Çat. Br. 5, 2, 4, 18. 1, 7, 2, 4. 3, 7, 2, 2. Kāt. Çr. 14, 3,
16. 17, 2, 4. ऊर्ध्वं प्राणमुवपत्यपानं प्रत्यगस्यति Kāthop. 5, 3. शरान्संतत-
मस्यताम् (gen. pl.) R. 2, 67, 18. अस्यन् MBh. 1, 2292. वाणिरस्यता 8235.
तस्मिन्नास्यदिषीकास्त्रम् Ragh. 12, 23. तावास्यतो वाणान् Bhaṭṭ. 15, 91.
शस्त्राण्यसुः परस्परम् 14, 77. अस्यमानं (das med. angeblich nach P. 3, 2,
129) महागदाः 5, 81. अस्त geworfen AK. 3, 2, 37. Triak. 3, 3, 147. H. 324.
वातास्तं वारि शीकरः 165. रामास्त आश्रुगः Ragh. 12, 91. अस्त (इषु)
Çat. Br. 3, 7, 2, 2. — 2) *vertreiben, verscheuchen:* स्त्रीणामासामास अमम्
Nalod. 4, 86. Vgl. u. अप. — 3) *von sich werfen, ablegen, fahren lassen,*
aufgeben: अस्तवाराकृष्ट adj. Kathās. 11, 56. अस्तमौन 6, 141. अस्तशोक
Prab. 93, 3. अस्तकोप ad Megh. 113. — 4) *अस्त beendigt* Med. t. 2.